Ashish kumar Thakur
B.A-II, History (H)-II
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur.

औरंगजेब [1658-1707]

(Part-II)

स्थापत्य कला :-

1659 मे दिल्ली के लाल किला (शाहजहाँ द्वारा निर्मित) के भीतर औरंगजेब ने मोती मस्जिद का निर्माण किया जिससे मध्यकालीन इतिहास की सबसे खुबसूरत मस्जिद कहा गया।

1674 में औरंगजेब ने लाहौर का बादशाही मस्जिद बनवाया, जिसे भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे बड़ा माना जाता है।

1678 ई० में अपनी बेगम 'रबिया दुर्रानी' की स्मृति में औरंगाबाद (महाराष्ट्र) मे इसने बीबी का मकबरा बनवाया, जिसे दक्षिण भारत का ताजमहल कहा जाता है।

औरंगाबाद के बाद औरंगजेब ने सबसे प्रमुख स्थापत्यों मे दिल्ली का सफदरजंग का मकबरा है जिसे चारबाग शैली का अंतिम उदाहरण माना गया है।

संगीत कला :- औरंगजेब ने अपने शासन के 11वें वर्ष सभी दरबारी चित्रों को बर्खास्त कर दिया गया तथा संगीत को इस्लाम विरोधी घोषित कर उसे प्रतिबंधित कर दिया।

फिर भी औरंगजेब के काल मे भी संगीत की सबसे अधिक पुस्तके लिखी गई है।

फकी उल्लाह ने संगीत की पुस्तक- मान कौतुहल का फारसी अनुवाद राग दर्पण के नाम से करके औरंगजेब को समर्पित किया था। औरंगजेब के पुत्र मुहम्मद ने संगीत पर एक पुस्तक तुह-फुतुउ-हिन्द की रचना की।

चित्रकला :- इस्लाम विरुद्ध होने के कारण औरंगजेब ने चित्रकारों को भी बर्खास्त किया।

उसके शासन के अंतिम समय मे औरंगजेब के कुछ चित्र अवश्य बने, जिसमें उसे शिकार खेलते, दरबार

Ashish

लगाते हुए तथा युद्ध करते हुए दिखाया गया है।

औरंगजेब ने शाहजहाँ कालीन कई भित्ती चित्रों को भी मिटवा दिया था। इसके समय कई क्षेत्रीय शैली उदित हुई जैसे - मधुबनी पेंटिंग, बसौली शैली, किशनगढ़ शैली, पटना कलम आदि।

औरंगजेब तथा साहित्य कला :- औरंगजेब के काल मे अनुवाद विभाग बंद कर दिया गया। इसके काल मे निम्न पुस्तके लिखी गई है।

a) मुंतखाब- उल- लुबाब - खफी खां द्वारा रचित
b) फतुहात - ए- आलमगीरी - ईश्वर दास नागर द्वारा रचित
यह एक मात्र ऐसी साहित्यिक रचना है, जिसे औरंगजेब का पोषण प्राप्त था।

c) आलमगीरनामा - मुहम्मद काजीम द्वारा रचित
d) खुलासत उत तवारिख - सुजान राय खत्री द्वारा।
e) नुश्का - ए- दिलकुशा - भीम सेन द्वारा रचित
(f) मासीर- ए- आलमगीरि - शाकी मुस्तैद खाँ।

औरंगजेब की पुत्री जेबुन्निशा भी एक साहित्यिक महिला थी। औरंगजेब के पत्रो का संकलन - रुक्कात- ए- आलमगीरी कहलाता है।
औरंगजेब पत्र लिखने का बहुत बड़ा शौकीन था।

3 मार्च 1707 को औरंगजेब की मृत्यु हो गई। और उसे दौलताबाद के निकट रोजा (खुल्दाबाद) में शेख- जैन- उल- हक सूफी संत के मजार के निकट दफनाया गया।

Ashish